School of Education

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "---Research Topic दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की सामाजिक भूमिका संवर्धन का विद्यालयी जीवन के सन्दर्भ में अध्ययन" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Education under school of Education of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year-2023

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Dr. Dinesh Singh and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted

Parvind Kr. Verma.
Parvind Kumar Verma
2100904

Research Supervisor

21/07/2025
Dr. Dinesh Singh
Asso.professor
School of Education

24.07.2025
Prof. P.K. Astaline
(Director , School of Education)

24.07.25
Prof. P. K. Pandey
(Director, R&D Cell)

(Approved Research Topic

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की सामाजिक भूमिका संवर्धन का विद्यालयी जीवन के सन्दर्भ में अध्ययन

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN EDUCATION

From
U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

Parvind Kumar Verma

Enrollment no. 2100904

Under the supervision of

Dr. Dinesh Singh

Associate Professor

School of Education

U.P. Rajarshi Tandon Open University
Shantipuram, (Sector-F) Phaphamau, Prayagraj- 211021

ABSTRACT

शिक्षा का अधिकार हमारे संविधान में सभी लोगो को दिया गया है।शिक्षा गुणवत्ता पूर्ण हो इसकी भी निश्चितता शासन स्तर से होती है लेकिन जब बात दिव्यांगजनों की आती है, तब शिक्षा तो दूर, उनके अक्षमता पर लोग उलझ के रह जाते हैं। कभी भी उनके जीवन के गुणवत्ता के बारे में कोई बातचीत नहीं करता, केवल अक्षमता की सहानुभूति ही सबसे बड़ी उपलब्धि हो जाती है। दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़े समूह की शिक्षा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के केंद्र में है, आने वाले दिनों में शिक्षा को बढ़ावा देना सरकार की प्रथम प्राथमिकता है।

प्राकृतिक द्वारा प्रदत्त अंगों में मानव का नेत्र सबसे महत्वपूर्ण अंग है।मानव किसी भी सूचना का लगभग 80 प्रतिशत भाग अपने दृष्टि से ग्रहण और संप्रत्य का निर्माण करता है। लेकिन किसी कारण से मानव दृष्टिबाधित हो जाता है तब उसका संपूर्ण जीवन प्रभावित एंव समस्याओं से घिर जाता है।

वर्तमान में दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर नामांकन की स्थिति अति दयनीय है। प्राथमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों का विद्यालयों में नामांकन 1784766 है परंतु माध्यमिक विद्यालयों में यह घटकर मात्र 247571 रह जाता है। विशिष्ट आवश्यकता वाले लगभग 85 प्रतिषत विद्यार्थी प्राथमिक शिक्षा के बाद माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर पढ़ाई छोड़ दे रहे हैं जो भारत के दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए बड़ी चुनौती है। इस स्तर पर विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय छोड़ने की दर इतनी ज्यादा क्यों है? आदर्श प्रावधानों के बावजूद दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा इतनी उपेक्षित क्यो है? कहीं न कहीं विद्यालयी जीवन और सामाजिक भूमिका संवर्धन एक कड़ी है जिस पर हमें गहन चिंतन करने की आवश्यकता है।

Key tearms

दृष्टिबाधित, विद्यालयी जीवन, सामाजिक भूमिका संवर्धन

Parvind kr verma

CONTENTS

S. NO.	Description	Page no.
		4-5
1	Introduction	5-9
2	Literature Review	10
3	Statement of Problem	11
4	Objectives of the Study	12
5	Research Methodology	13
6	Sample& delimitation	14-15
7	References	

Plagiarism Report

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की सामाजिक भूमिका संवर्धन का विद्यालयी जीवन के सन्दर्भ में अध्ययन

प्रस्तावना

शिक्षा का अधिकार हमारे संविधान में सभी लोगो को दिया गया है।शिक्षा गुणवत्ता पूर्ण हो इसकी भी निश्चितता शासन स्तर से होती है लेकिन जब बात दिव्यांगजनों की आती है, तब शिक्षा तो दूर, उनके अक्षमता पर लोग उलझ के रह जाते हैं। कभी भी उनके जीवन के गुणवत्ता के बारे में कोई बातचीत नहीं करता, केवल अक्षमता की सहानुभूति ही सबसे बड़ी उपलब्धि हो जाती है। दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़े समूह की शिक्षा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के केंद्र में है, आने वाले दिनों में शिक्षा को बढ़ावा देना सरकार की प्रथम प्राथमिकता है।

प्राकृतिक द्वारा प्रदत्त अंगों में मानव का नेत्र सबसे महत्वपूर्ण अंग है।मानव किसी भी सूचना का लगभग 80 प्रतिशत भाग अपने दृष्टि से ग्रहण और संप्रत्य का निर्माण करता है। लेकिन किसी कारण से मानव दृष्टिबाधित हो जाता है तब उसका संपूर्ण जीवन प्रभावित एंव समस्याओं से घिर जाता है।

वर्तमान में दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रत्येक स्तर परनामांकन की स्थिति अति दयनीय है। प्राथमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों का विद्यालयों में नामांकन 1784766 है परंतु

माध्यमिक विद्यालयों में यह घटकर मात्र 247571 रह जाता है। विशिष्ट आवश्यकता वाले लगभग 85 प्रतिशत विद्यार्थी प्राथमिक शिक्षा के बाद माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर पढ़ाई छोड़ दे रहे हैं जो भारत के दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए बड़ी चुनौती है। इस स्तर पर विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय छोड़ने की दर इतनी ज्यादा क्यों है? आदर्श प्रावधानों के बावजूद दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा इतनी उपेक्षित क्यो है? कहीं न कहीं विद्यालयी जीवन और सामाजिक भूमिका संवर्धन एक कड़ी है जिस पर हमें गहन चिंतन करने की आवश्यकता है।

यूनिसेफ ने चाइल्ड फ्रेंडली स्कूल एंड सिस्टम की रुपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि विद्यालय के बच्चों में कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। समाज के वंचित वर्ग और अशक्त बच्चों को तवज्जो दी जानी चाहिए। यूनिसेफ द्वारा की गई संस्तुति के अनुसार विद्यालय का वातावरण ऐसा होना चाहिए जहां बच्चे चीजों को देखें, समझे ,चर्चा करें और नई बातें सीखें। बच्चों को मातृभाषा के महत्व को बताना चाहिए तथा उन भाषाओं में पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जानी चाहिए।दिव्यांग तथा सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े विद्यार्थियों को सामाजिक अवमूल्यन का शिकार होने से बचाने तथा सामाजिक भूमिकासुदृढ़करने का महत्वपूर्ण साधन शिक्षा ही है। प्राथमिक शिक्षा के प्रसार की सर्वोच्च प्राथमिकता है परंतु माध्यमिक शिक्षा के गुणवत्ता सुधार कार्य में उत्साहपूर्ण कार्यवाही करने की आवश्यकता है।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

जीवन की गुणवत्ता, और सामाजिक भूमिका संवर्धन से संबंधित विभिन्न विद्वानों द्वारा कई अध्ययन किए गए हैं, जिनका समीक्षात्मक विवरण निम्नवत है–

ओलिवेरा और अन्य (2017) ने 'दृष्टिबाधित बच्चों और किशोरों के जीवन की गुणवत्ता' पर एक अध्ययन किया और पाया कि व्यक्तिगत परिणामों को जानने के लिए व्यक्ति अपने स्वयं के जीवन के बारे में जानकारी एकत्र करने के महत्व पर बल देता है।

वुलेटिक और अन्य (2016) ने 'दृष्टिबाधित और आंशिक दृष्टिबाधित वाले लोगों में जीवन की गुणवत्ता' विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन में विभिन्न जीवन क्षेत्रों के साथ वयस्क प्रतिभागियों की संतुष्टि की जांच करने के लिए एक समाजशास्त्रीय और स्वास्थ्य प्रश्नावली

Parvind Kr. Verma.

और व्यक्तिगत कल्याण सूचकांक का उपयोग किया गया। निष्कर्ष के रूप में पाया कि नेत्रहीन और आंशिक रूप से दृष्टिहीन लोगों में जीवन की व्यक्तिपरक गुणवत्ता 60 से 80 पैमाने की अधिकतम वैश्विक आबादी के लिए सैद्धांतिक रूप से अपेक्षित मानक सीमा के भीतर है। दृष्टिहीनता के प्रकार और अवधि के साथ–साथ मनोसामाजिक पुनर्वास में भागीदारी दृष्टिबाधित और आंशिक रूप से दृष्टिबाधित लोगों के जीवन की व्यक्तिपरक गुणवत्ता के महत्वपूर्ण संकेतक हैं।

लचापिल्ले एवं अन्य (2012) ने 'जीवन की गुणवत्ता और आत्मनिर्णय के बीच संबंध : एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन' विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन एक अंतरराष्ट्रीय नमूने के साथ पिछले अध्ययन के निष्कर्षों को दोहराता है और जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए आत्मनिर्णय के महत्व की पुष्टि करता है।

मैले एवं हाउते (2011) ने अपने अध्ययन 'द क्वालिटी ऑफ स्कूल लाइफ : टीचर–स्टूडेंट ट्रस्ट रिलेशनशिप्स एंड द ऑर्गेनाइजेशनल स्कूल कॉन्टेक्स्ट' में पाया कि विश्वास के गठन के संबंध में उन पर लगाए गए उम्मीदों को पूरा करने की छात्रों की क्षमता के बारे में शिक्षक की धारणाओं का महत्व होता है। साथ ही शिक्षक का विश्वास स्कूल के संदर्भ से प्रभावित होता है तथा छात्र और संस्कृति की शैक्षणिक अभिविन्यास कई भूमिका निभाती है।

ओस्बर्न (2006) ने 'सामाजिक भूमिका संवर्धन सिद्धांत एक अवलोकन' विषय पर अध्ययन किया और परिणाम के रूप में पाया कि जो व्यक्ति महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिकाएं रखता है, उस व्यक्ति को समाज से उन अच्छी चीजों को प्राप्त करने की अत्यधिक संभावना होती है जो उस समाज के लिए उपलब्ध हैं।

वेह्मेयर एवं शालॉक (2001) ने आत्मनिर्णय और जीवन की गुणवत्ताः विशेष शिक्षा सेवाओं और समर्थन के लिए निहितार्थ' विषय पर अध्ययन किया और निष्कर्ष के रूप में पाया कि आत्मनिर्णय और जीवन की गुणवत्ता एक दूसरे से संबंधित हैं। स्व–निर्णय पर ध्यान देने से व्यक्तिगत और व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण परिणामों पर विचार करने की आवश्यकता होती है।

उपरोक्त अध्ययनों से स्पष्ट है कि अधिकांश अध्ययन छात्रों की जीवन की गुणवत्ता एवं

Parvind Ku Verma

आत्मनिर्णय से सम्बन्धित है कुछ अध्ययन प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के दृष्टिबाधित और आंशिक दृष्टिबाधित लोगों की जीवन की गुणवत्ता से सम्बन्धित है। प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के शिक्षकों पर जो अध्ययन हुए हैं ।वह शिक्षको के विद्यालय के प्रति विश्वास से सम्बन्धित है। विद्यार्थियों के विद्यालय जीवन गुणवत्ता व सामाजिक भूमिका संवर्धन से संबंधित जो अध्ययन हुए है, उनमे से अधिकांश प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के सामान्य विद्यार्थियों से संबंधित हैं।प्राथमिक व माध्यमिक स्तर केविद्यार्थी विशेष विद्यालयों के दृष्टिबाधित विद्यार्थी से भिन्न है।अतःदृष्टिबाधित विद्यार्थियों के विद्यालयी जीवन व सामाजिक भूमिका संवर्धन का अध्ययन किया जाना उपयुक्त प्रतित होता है।

शोध अध्ययन का औचित्य

मनुष्य जिज्ञासा से अपने आस–पास के परिवेश से बहुत कुछ देखकर, सीखने का प्रयास करता है। जैसे–जैसे मानव सभ्यता का विकास हुआ, वह अपने प्रयासों से अबूझ पहेलियों को सुलझाता रहा, साथ ही साथ वह अपने अनुभव एवं बुद्धि द्वारा संचित ज्ञान से आने वाली पीढ़ियों को अग्रेषित करता रहा। सीखने और सिखाने के जिन पारम्परिक तरीकों को शिक्षकों ने अपनाया उसमें समय और परिस्थिति के अनुसार निरन्तर परिवर्तन होता रहा।**रविंद्र नाथ टैगोर** ने कहा है कि "यदि अध्यापक स्वयं सीखना बंद कर दें, तो वह दूसरों को क्या शिक्षा दे सकते हैं, अध्यापक तो एक दीपक की भॉंति है, जो दूसरों को प्रकाश देते हैं। यदि दीपक स्वयं ही जलना बंद कर दें तो वह दूसरों को क्या रोशनी देगा?"

जीवन की गुणवत्ता, संस्कृति, मूल्य प्रणालियों, लक्ष्यों, अपेक्षाओं, मानकों और सरोकारों के संबंध में यह व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य, मनोवैज्ञानिक स्थिति, व्यक्तिगत विश्वासों, सामाजिक संबंधों और उनके पर्यावरण की मुख्य विशेषताओं के संबंध में जटिल तरीके से प्रभावित करने वाली अवधारणा है। मानव जीवन का स्वर्णिम पल विद्यालयों में गुजरता है तथा आगामी जीवन की उन्नती विद्यालयी जीवन गुणवत्ता पर निर्भर होती है।स्कूल की विशिष्ट गतिविधियों में सकारात्मक और नकारात्मक अनुभवों के दृष्टिकोण से विद्यालय से संबंधित जीवन की गुणवत्ताविशेष रूप से छात्रों की सामान्य भलाई और संतुष्टि को संदर्भित करता है

Arvind Kr. Verma

(मालिन व लिन्नाकाइला, 2001) सामाजिक भूमिका संवर्धन (एसआरवी) सिद्धांत बताता है कि कैसे एक व्यक्ति का समाज द्वारा अवमूल्यन किया जाता है और सकारात्मक भूमिकाओं और गतिविधियों के साथ उस अवमूल्यन को कम करने या नकारने की दिशा में काम करता है। विद्यालय, व्यक्तियों की सामाजिक भूमिका संवर्धन का मुख्य संसाधन होते है, जो उन्हें मूल्यवान सामाजिक भूमिकाओं के निर्वहन हेतु सक्षम बनाती है।

कराद्जियास और अन्य(2001) ने विद्यालयी जीवन की गुणवत्ता को अनुभव में छात्रों की भागीदारी के परिणाम के रूप में परिभाषित किया है। जो लोग सामाजिक भूमिकाओं में मूल्यवान हैं,उनके सामाजिक भूमिका का मूल्यांकन जीवन की गुणवत्ता और मनोवैज्ञानिक कल्याण से किया जाता है।उन्नत सामाजिक भूमिका वाले व्यक्तियों का जीवन स्तर सदैव बेहतर होता है। सामाजिक भूमिकाओं का अवमूल्यन करने वाले व्यक्तियों की तुलना में उनका मनोवैज्ञानिक कल्याण हमेशा उत्तम होता है। किसी व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह अपनी दृष्टि में अच्छा जीवन व्यतीत करे।दिव्यांगता, जाति, जातीयता, धर्म, धन की कमी, अशिक्षा आदि एक व्यक्ति को जीवन की अच्छी चीजों का अनुभव करने में बाधक हो सकती है। अक्षमता वाले लोगों को अक्सर अन्य लोगों द्वारा अवमूल्यन और नकारात्मक रूप से आंका जाता है।

वोल्फेंसबर्गर(1995) के अनुसार– सामाजिक भूमिका संवर्धन (एसआरवी) "लोगों के लिए मूल्यवान सामाजिक भूमिकाओं की सक्षमता, स्थापना, वृद्धि, रख–रखाव, और रक्षा के बारे में विज्ञान हमें क्या बता सकता है, इसका अनुप्रयोग है।"

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी जीवन एवं सामाजिक भूमिका संवर्धन में सुधार मंद गति से हो रहा है।दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के विद्यालयी जीवन और सामाजिक भूमिका संवर्धन के बारे में शोध बहुत कम हुए है। शोधकर्ताओं द्वारा शोध के क्षेत्र में विशेषकर, प्रारंभिक शिक्षा तथा माध्यमिक शिक्षा तथा उसके गुणवत्ता के संबंध में,दिव्यांग बच्चो की शिक्षा, समायोजन, समस्या, इत्यदि पर शोध तो किया गया है लेकिन दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के विद्यालयी जीवन और सामाजिक भूमिका संवर्धन से सम्बन्धित शोध अध्ययनों का अभाव है।इस पर शोध करने की आवश्यकता है।अतःदृष्टिबाधित विद्यार्थियों की सामाजिक

Parvindkr verma.

भूमिका संवर्धन का विद्यालयी जीवन के सन्दर्भ में अध्ययन किया जाना अत्यंत प्रासंगिक एवं औचित्यपूर्ण है।

शोध अध्ययन की सार्थकता

विद्यालयी जीवन किसी भी बच्चे की सफलता, दक्षता, उच्च योग्यता के साथ–साथ समाजीकरण की प्रक्रिया से जुड़ी होती है। सामाजिक भूमिका संवर्धन के निर्माण में मदद करता है। इस शोध के माध्यम से निम्न सार्थकता है।

1. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के सामाजिक भूमिका संवर्धनकी स्थिति से विद्यालय की कार्यशैली में सुधार होगा।
2. निति निर्माताओं को योजना बनाने में दिव्यांगजनों को भी समान अवसर प्राप्त होगा।
3. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की सामाजिक भूमिका संवर्धन की स्थिति से समाज में जागरुकता आयेगी।
4. समाज में दिव्यांगो के प्रति तदनुभूति का भाव उत्पन्न होगा।
5. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के सामाजिक भूमिका संवर्धन से उनके अभिभावक की दृष्टिबाधित बच्चों के प्रति असमर्थता व नाकारात्मकता का भाव दूर होगा।
6. दृष्टिबाधित बच्चें अन्य दिव्यांग बच्चों के लिए प्रेरणा बनेगें।
7. सामान्य जन व समाज के लोग दिव्यांगजनों की अक्षमता नही बल्कि क्षमता पर ध्यान केंद्रित करेगें।

समस्या कथन

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की सामाजिक भूमिका संवर्धन का विद्यालयी जीवन के सन्दर्भ में अध्ययन ।

प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की संक्रियात्मक परिभाषाएं

दृष्टिबाधित–निःशक्त जन अधिकार अधिनियम 2016 के अनुसार – दृष्टिबाधित से ऐसी

Arvind Kr. verma.

दशा अभिप्रेत से है जिसमें सर्वोत्तम सुधार के पश्चात व्यक्ति में दृष्टि का पूर्णतया अभाव या सर्वाधिक संभव सुधार के साथ बेहतर आंख में दृष्टि तीक्ष्णता 3/60 से कम या 10/200 (स्नेलन) से कम या 10 डिग्री से कम के किसी कोण पर कक्षांतरिक दृश्य क्षेत्र की परिसीमा की स्थितियों में से कोई एक स्थिति विद्यमान होती है।

विद्यालयी जीवन–विद्यालयी जीवन का तात्पर्य विद्यार्थी की विद्यालयी संतुष्टि, विद्यालयी प्रतिबद्धता एवं शिक्षकों के प्रति दृष्टिकोण से है।

सामाजिक भूमिका संवर्धन –सामाजिक भूमिका संवर्धन अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन द्वारा दी गई परीभाषा को माना जायेगा–सामाजिक भूमिका संवर्धन का सिद्धांत सामान्यीकरण सिद्धांत के उत्तराधिकार में विकसित किया गया, जो दिव्यांग लोगों के लिए सामाजिक रूप से मूल्यवान भूमिका को बनाने या समर्थन करने के महत्व पर बल देता है। सामाजिक भूमिका संवर्धन में लोगों को अधिक आसानी से स्वीकार किया जाता है यदि वे जीवन की बेहतर गुणवत्ता प्राप्त करते हैं।

सामाजिक भूमिका संवर्धन से हमारा आशय समाज से वंचित लोगों को अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में मदद करने से है।

अध्ययन के लिए शोध –प्रश्न

1. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की विद्यालयी जीवन की स्थिति क्या है?
2. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की सामाजिक भूमिका संवर्धन की स्थिति क्या है?
3. क्या दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की विद्यालयी जीवन एंव सामाजिक भूमिका संवर्धन सह–संबंधित है?

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. लिंग के आधार पर दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के सामाजिक भूमिका संवर्धन की तुलना करना।
2. लिंग के आधार पर दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के विद्यालयी जीवन की तुलना करना।
3. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के सामाजिक भूमिका संवर्धन एंव विद्यालयी जीवन के मध्य सह सम्बंध का अध्ययन करना।
4. उच्च व निम्न विद्यालयी जीवन वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के सामाजिक भूमिका संवर्धन की तुलना करना।

शोध की परिकल्पना

शोध की परिकल्पना से तात्पर्य शोध विषय की समस्या चयन एवं विश्लेषण के पष्चात् सम्बन्धित शोध साहित्य के अध्ययन, स्वयं के अनुभव तथा विषेषज्ञों से चर्चा के आधार पर उस समस्या के समाधानों का अनुमान लगाना है।

उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है –

1. लिंग के आधार पर दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के सामाजिक भूमिका संवर्धन में अन्तर है।
2. लिंग के आधार पर दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के के विद्यालयी जीवन में अन्तर है।

3 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के विद्यालयी जीवन एंव सामाजिक भूमिका संवर्धन के मध्य सह सम्बंध है।

4 उच्च व निम्न विद्यालयी जीवन वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के सामाजिक भूमिका संवर्धन में अन्तर है।

अनुसंधान अभिकल्प

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में अनुक्रमिक अन्वेषणात्मक अभिकल्प का उपयोग किया जायेगा। अनुक्रमिक अन्वेषणात्मक अभिकल्प एक मिश्रित पद्धति अध्ययन अभिकल्प है, जिसमें प्रदत्त संग्रह और विश्लेषण में मात्रात्मक चरण एवं गुणात्मक चरण का अनुसरण किया

Parvind Kr. Verma.

जाता है (फेटर्स, करी, और क्रेसवेल, 2013)।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक अनुसंधान विधि पर आधारित होगा तथा प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन में प्रयुक्त चर

- दृष्टिबाधित विद्यार्थी
- विद्यालयी जीवन
- सामाजिक भूमिका संवर्धन

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तावित शोध अध्ययन की जनसंख्या उत्तर प्रदेश के महानगरों में अवस्थित दृष्टिबाधित विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–6, 7 एवं 8 के दृष्टिबाधित विद्यार्थी होगें। शोधकर्ता द्वारा महानगरों व दृष्टिबाधित विद्यालयों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा एवं न्यादर्श के रूप में कक्षा–6, 7 तथा 8 में अध्ययनरत दृष्टिबाधित 100 विद्यार्थियों (50 छात्र व 50 छात्रा) का चयन उद्देश्यपरक प्रतिचयन विधि का प्रयोग कर किया जायेगा।

अनुसंधान उपकरण

सामाजिक भूमिका संवर्धन एंव विद्यालयी जीवन से संबंधित समंकों के संकलन हेतु निम्नलिखित शोध उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा –

- स्वनिर्मित सामाजिक भूमिका संवर्धन साक्षात्कार अनुसूची– विद्यार्थियों हेतु
- स्वनिर्मित विद्यालयी जीवन साक्षात्कार अनुसूची– विद्यार्थियों हेतु

समंक संकलन प्रक्रिया एवं प्रयुक्त सांख्यिकी विश्लेषण प्रविधि

शोधकर्ता विद्यालयी जीवन और सामाजिक भूमिका संवर्धन(मात्रात्मक डेटा) के लिए

Arvind Kr. Verma

फोकस समूह साक्षात्कार का उपयोग करेगा।

फोकस समूह, एक समूह साक्षात्कार है, जिसमें जनसांख्यिकी रूप से समान लोगों या प्रतिभागियों की एक छोटी संख्या शामिल होती है जिनके पास लक्षण/अनुभव सामान होते हैं। विशिष्ट शोधकर्ता/मूल्यांकनकर्ता द्वारा पूछे गए प्रश्नों पर उनकी प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। इस शोध में सामग्री एवं प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु समंक की प्रकृति के अनुरूप उपयुक्त सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग किया जाएगा।

अध्ययन का सीमांकन

कोई भी शोध अध्ययन अपने आप में पूर्ण नहीं होता है। अध्ययन के उद्देश्य एवं अध्ययन की समय–सीमा को ध्यान में रखकर किसी भी शोध कार्य का सीमांकन करना आवश्यक होता है जिससे कि समय, धन एवं श्रम के अपव्यय से बचा जा सके। शोधकर्ता द्वारा इन्हीं सम्पूर्ण कारकों को ध्यान में रखकर अपने शोध अध्ययन का सीमांकन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के महानगरों में अवस्थित दृष्टिबाधित विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–6, 7 एवं 8 के 100 दृष्टिबाधित(50 छात्र व 50 छात्रा) तक सीमित रहेगा।

अध्यायों का प्रस्तावित विभाजन

प्रस्तावित शोध अध्ययन को पाँच अध्यायों में विभाजित किया जायेगा। अध्यायों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया जायेगा–

प्रथम अध्याय : प्रस्तावना

द्वितीय अध्याय : सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

तृतीय अध्याय : शोध अभिकल्प

चतुर्थ अध्याय : समंकों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

पंचम अध्याय : निष्कर्ष एवं सुझाव

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

परिशिष्ट :

Arvind Kr. Verma.

संदर्भ ग्रंथ सूची

- आर्मस्ट्रांग, जे. (2006), बौद्धिक अक्षमता वाले लोगों के समर्थन में सामाजिक भूमिका के महत्व का अनुप्रयोग – एक सिंहावलोकन।
- ओलिवेरा, ओ., रिबेरो, सी., सिमोस, सी. व परेरा, पी. (2018), दृष्टिबाधित बच्चों और किशोरों के जीवन की गुणवत्ता, दृष्टिहीनता का ब्रिटिश जर्नल, 36(1), 42–56।
- ओसबर्न,जे.(2006), सामाजिक भूमिका मूल्य निर्धारण सिद्धांत का अवलोकन, एसआरवी जर्नल, 1(1), 4–13।
- कराट्जियास,ए. पावर, आर.जी. एवं स्वानसन,वी. (2001), स्कूली जीवन की गुणवत्ताः स्कॉटिश माध्यमिक विद्यालयों में प्रदर्शन संकेतकों के आधार पर उपकरण का विकास और प्रारंभिक मानकीकरण, स्कूल प्रभावशीलता और स्कूल सुधार, 12, 265–284।
- केफ,एस.और डेकोविच,एम. (2004), किशोरों की भलाई में माता–पिता और साथियों के समर्थन की भूमिकाः दृष्टि हानि और किशोरों की तुलना, किशोरावस्था का जर्नल, 27(4), 453–466।
- फेटर्स,एम.डी.,करी,एल.ए.,व क्रेसवेल,जे.डब्ल्यू. (2013), मिश्रित विधियों में एकीकरण, सिद्धांतों और प्रथाओं का डिजाइन, स्वास्थ्य सेवा अनुसंधान, 2134–2156।
- लेमे,आर.(1995), सामाजिक अवमूल्यन के जोखिम में लोगों के लिए सामाजिक संदर्भों और मानव सेवाओं के लिए गाइड के रूप में सामाजिक भूमिका मूल्यांकन और सामान्यीकरण का सिद्धांत, डेलओर्टो,ए.ई.और मारानेली,आर.पी.,इनसाइक्लोपीडिया ऑफ डिसेबिलिटी एंड रिहैबिलिटेशन, न्यूयॉर्क, मैकमिलन, 515–521।
- मालिन,ए.व लिन्नाकीला,पी.(2001), फिनिश स्कूल जीवन की गुणवत्ता के बार–बार माप में बहुस्तरीय मॉडलिंग, स्कैंडिनेवियाई जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 45, 145–166

Parvind Kr. Verma

- फ्लिन,आर.जे.,औरलेमे,आर.(1999),में सामान्यीकरण और सामाजिक भूमिका मूल्य निर्धारण की एक चौथाई सदीः विकास और प्रभाव। ओटावाः यूनिवर्सिटी ऑफ ओटावा प्रेस, 507–547।
- वोल्फेंसबर्गर,डब्ल्यू. (1992), मानव सेवाओं की संरचना के लिए एक उच्च स्तरीय अवधारणा के रूप में सामाजिक भूमिका मूल्यांकन का संक्षिप्त परिचय।
- वोल्फेंसबर्गर,डब्ल्यू.(2013), सामाजिक भूमिका मूल्यांकन का एक संक्षिप्त परिचयः सामाजिक रूप से अवमूल्यित लोगों की दुर्दशा को संबोधित करने और मानव सेवाओं की संरचना के लिए एक उच्च–स्तरीय अवधारणा (चतुर्थ संस्करण), प्लांटगेनेट ऑनः वेलोर प्रेस।
- वोल्फेंसबर्गर,डब्ल्यू. (1985), सामाजिक भूमिका मूल्यांकनः सामान्यीकरण के लिए एक नई अंतर्दृष्टि और एक नया शब्द। ऑस्ट्रेलियन एसोसिएशन फॉर द मेंटली रिटार्डेड जर्नल, 9(1), 4–11।
- http%//wwwsocialrolevalorizationcom/articles/armstrong/application&of&srv& insupp orting&people&with&an&intellectualdisability-Pdf
- https%//www-ncbi-nlm-nih-gov/pmc/articles/PMC3395923/#%&%teÛt¾The% 20WHOQOL%2DBREF%20is%20a]Q01%20and%20general%20health%20itemsA
https%//sparqtools-org/mobility&measure/psychological&wellbeing&scale

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language	Hindi

Submission Information

Author Name	Parvind Kumar Verma
Title	दृष्टि बाधित विद्यार्थियों की सामाजिक भूमिका संवर्धन का विद्यालयी जीवन के संदर्भ में अध्ययन
Paper/Submission ID	3609174
Submitted by	dineshedu.alld@gmail.com
Submission Date	2025-05-13 16:14:21
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**3%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Parvind kr. verma.